कोंकण रेल के नए प्रयास

- **भानु प्रकाश तायल,** अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

कोंकण रेलवे देश की ऐसी पहली रेल परियोजना है जिसे बी.ओ.टी.(निर्माण, परिचालन एवं हस्तांतरण) के आधार कार्यान्वित किया गया है। इस कंपनी को 800 करोड़ रुपए की इक्विटी के रूप में रेल मंत्रालय के साथ चार राज्यों महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक और केरल के सहयोग से बनाया गया है। इसका निर्माण कार्य सन् 1990 में प्रारंभ किया गया और 741 कि.मी. की संपूर्ण लाइन का कार्य सन 1998 में पूरा किया गया। रेल मार्ग को 1 मई, 1998 को तत्कालीन माननीय प्रधानमंत्री जी के कर-कमलों से राष्ट्र को समर्पित किया गया। इस बहुप्रतीक्षित लाइन के निर्माण से मुंबई से मंगलोर की दूरी 1127 कि.मी.कम हुई है जिसके फलस्वरूप यात्रा के समय में लगभग 26 घंटों की कमी आई है।

कॉर्पोरेशन का गठन

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड (के.आर.सी.एल.) का गठन निर्माण, परिचालन एवं हस्तांतरण (बी.ओ.टी.) के आधार पर किया गया था जिसे महाराष्ट्र में रोहा से कर्नाटक में मंगलोर तक रेलवे निर्माण कार्य के उद्देश्य से मंत्रिमंडल ने मंजूरी दी थी जो भविष्य में इस प्रकार की कई और परियोजनाएं बनाने के लिए यह मार्गदर्शक बनी। पश्चिमी तट क्षेत्र के दूरदराज के इलाकों के विकास के लिए इस परियोजना को सर्वोच्च राष्ट्रीय महत्व दिया गया । कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड (के.आर.सी.एल.) 19 जुलाई, 1990 को एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी में शामिल किया गया। भारत के पश्चिमी तटीय क्षेत्र में एक बड़ी लाइन रोहा (मुंबई के पास) से दक्षिण में मंगलोर तक जोड़ने के लिए आवश्यक निधि जुटाई गई और कोंकण रेलवे के निर्माण और परिचालन के लिए 20 अगस्त, 1990 को व्यापार शुरू करने के लिए प्रमाण पत्र प्राप्त किया गया।

लाइन का प्रारंभ : भारत की सबसे आधुनिक रेलवे लाइन 26 जनवरी, 1998 में पूरी की गई। भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 1 मई, 1998 को पूरी परियोजना राष्ट्र को समर्पित की और इसकी एक इंजीनियरी चमत्कार के रुप में प्रशंसा की गई। कोंकण रेलवे को 2002 की विश्व बैंक की रिपोर्ट में न्यूनतम कर्मचारी और अन्य लागत के साथ अभिनव तथा रेलवे प्रणाली के परिचालन तथा अनुरक्षण के लिए आधुनिक तकनीक अपनाने के लिए मान्यता प्राप्त है। **इस दुर्गम क्षेत्र पर कई तकनीकी अभिनव प्रयासों व्दारा विजय प्राप्त किया गया जो देश में अन्य बुनियादी परियोजनाओं के लिए आदर्श बना।**

यात्री सेवाएं. : कोंकण रेलवे पर पहली यात्री गाड़ी दिनांक 20.03.1993 को उडुपी और मंगलौर के बीच चलाई गई थी। तब से पीछे मुड़कर नहीं देखा गया और कई गाड़ियां शुरू की गईं या कोंकण रेल मार्ग के माध्यम से चलाई गईं। वर्तमान में कोंकण रेलवे पर मेल / एक्सप्रेस की सैंतीस जोड़ियां और सवारी गाड़ियों की आठ जोड़ियां चलाई जा रहीं हैं।

कोंकण रेलवे की पहाड़ी इलाके और अस्थिर फॉर्मेशन एक खास विशेषता है। कोंकण रेलवे हर साल मानसून के दौरान प्रमाणित सेक्शन में 75 किमी प्रति घंटे और 90 किमी प्रति घंटे की गति प्रतिबंधों के साथ मानसून समय सारणी लागू करती है। यह समय पालन को बनाए रखते हुए गाड़ियों को सुरक्षित चलना सुनिश्चित करता है।

ग्राहक सेवाएं

कोंकण रेलवे एक नवीनतम रेलवे है। यह देश की सबसे आधुनिक रेलवे भी है। दूसरी कंपनियों के साथ प्रतियोगिता में सूचना प्रौद्योगिकी अपनाए जाने के कारण पुरस्कार भी जीता है। कोंकण रेलवे ने अपने लिए दूसरों से अलग लक्ष्य निर्धारित किए हैं। जो नई सहस्त्राब्दि में रेलों के लिए एक नए बदलाव का मार्ग प्रशस्त करेंगे। 'हमारे परिसर में सबसे महत्वपूर्ण ग्राहक हमारे यात्री हैं इन मूल्यों को कोंकण रेलवे ने अपनी कार्य प्रणाली में अपनाया है और इन्हें बनाए रखने के सतत् प्रयास किए जाते हैं। कोंकण रेलवे व्दारा शुरू किए गए कुछ ग्राहक अनुकूल उपाय निम्नानुसार हैं :

<u>श्रवण सेवा</u> : बेहतर ग्राहक सेवाओं के प्रति वचनबद्धता को बनाए रखने के लिए हमने कोंकण रेल मार्ग पर यात्रा करने वाले वरिष्ठ नागरिकों के लिए 'श्रवण सेवा "शुरू की है। यह योजना वरिष्ठ नागरिकों के लिए गाड़ी में चढ़ने/उतरते समय सामान ले जाने के लिए मदद उपलब्ध कराने की है। अपनी यात्रा के अग्रिम चार घंटे पहले 09664044456 नंबर पर एस.एम.एस.के. जरिए पी.एन.आर., कोच नं. और सीट नं. का संदेश भेजने से इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं। यह सेवा चिपलूण, रत्नागिरी, थिविम, करमाली और मडगांव स्टेशनों पर उपलब्ध है। कोंकण रेलवे द्वारा यह सेवा मुफ्त में प्रदान की जा रही है।

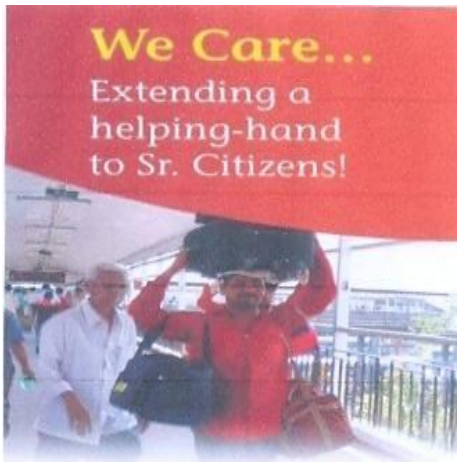

<u>सारथी सेवा</u> : विकलांग यात्रियों की सुविधा के लिए कोंकण रेलवे ने कुछ निर्धारित स्टेशनों पर कल्याणकारी एवं कार्पोरेट जिम्मेदारी के अंतर्गत एक विशिष्ट 'सारथी सेवा' शुरु की है। नामित स्टेशनों पर शारीरिक रूप से विकलांग यात्रियों के लिए एक सहायक के साथ पहिया कुर्सी उपलब्ध कराते हुए कोच तथा स्टेशन से बाहर निकलते समय यह सेवा मुफ्त में प्रदान की जाती है। वर्तमान में यह सेवा चिपलूण, रत्नागिरी, करमाली, मडगांव एवं उडुपि स्टेशनों पर शुरु की गई है। इस सेवा का लाभ उठाने के लिए यात्रियों को केवल एक एस.एम.एस. मोबाइल नं. 09664044456पर भेजना होता है। बाकी सारा ध्यान कोंकण रेलवे व्दारा रखा जाता है।

<u>डाइट और डाइबेटिक भोजन</u> : आहार के प्रति जागरूक यात्रियों के लिए उनकी मांग पर कोंकण रेलवे द्वारा अपने मार्ग पर गाड़ी सं.10111/10112 कोंकणकन्या एक्सप्रेस और गाड़ी सं.10103/10104 मांडवी एक्सप्रेस में "डाएट और डाइबेटिक भोजन" सेवाएं उपलब्ध करायी जा रही हैं।

- फलों के रस, नारियल पानी, ग्रीन टी, सोया दूध।
- नाश्ता - ओट मील, कॉर्नफ़्लेक्स, अंडा - सफेद आमलेट, दलिया/गेहूं का उपमा, दही।
- लंच/डिनर(शाकाहारी/मांसाहारी आहार)।
- नाश्ता – ग्रील्ड सैंडविच, अंकुरित चाट, उबली हुई सब्जियां और शुगर फ्री मिठाई।
- सूप – शाकाहारी / मांसाहारी ।

<u>कोंकण स्वाद</u> : कोंकण क्षेत्र समुद्र तटों, जंगलों, पहाड़ों और नदियों के साथ प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिध है। पर्यटन स्थल की समृद्धि की तरह 'कोंकण भोजन' अपने स्वादिष्ट खाने के लिए प्रसिद्ध है। कोंकण व्यंजन समृद्ध भारतीय मसाले, नारियल, कच्चे आम, कोकम, सूखे कोकम (आमसुल) के साथ मिश्रित होते हैं। भाकरी (चावल की रोटी), सोलकडी, मुंह में पानी लाने वाला आमरस और मिठाई की विविधता से कोंकणी भोजन पूर्ण होता है।

कोंकण रेलवे के 'कोंकण स्वाद' के माध्यम से इन व्यंजनों की ख्याति पूरे भारत के यात्रा करने वाले पर्यटकों में फैल जाएगी।

<u>ट्रेन में खरीदारी की सेवा</u> : ग्राहक को बेहतर सेवा और उनकी यात्रा को अधिक सुखद बनाने के लिए कोंकण रेलवे ने कोंकणकन्या तथा मांडवी एक्सप्रेस में रेल यात्रियों के लिए और एक अनुठी सेवा शुरु की है। कोंकण रेलवे से यात्रा करने वाले यात्री इस सेवा से आकर्षक एवं उपयोगी उत्पाद खरिद सकते हैं। इस अनूठी सेवा का आनंद अब तक सिर्फ हवाई यात्रियों या "ई" खरीदारों व्दारा उठाया जाता था। अब कोंकण रेलवे के यात्री भी अपनी यात्रा के दौरान अपने स्थान पर ही सही उत्पादों तथा शॉपिंग की खुशी का आनंद ले सकते हैं।

<u>स्टेशनों पर बॉयो-टॉलेट्स</u>: पर्यावरण के अनुकूल और रक्षा मंत्रालय, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डी.आर.डी.ओ.) व्दारा विकसित और अनुमोदित **बॉयो-टॉलेट्स**, कोंकण रेलवे के चिपलूण, कणकवली, सावंतवाडी, करमाली, मडगांव तथा कारवार स्टेशनों पर स्थापित किए गए हैं।

<u>एस.एम.एस.सेवा</u> : कॉर्पोरेशन को यात्री सेवा के संबंध में विभिन्न साधनों के माध्यम से शिकायतें प्राप्त होती रहती हैं। शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई करने से इन्हें सुलझाया / सुधारा जा सकता है। इसलिए कोंकण रेलवे ने दिनांक 15.08.2014 को तत्काल निवारण और सेवा में सुधार लाने के लिए एस.एम.एस. सेवा प्रदान की है जिसमें कोंकण रेल मार्ग के यात्री कॉर्पोरेशन द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बारे में शिकायतें / सुझाव भेज सकते हैं । इस सेवा के लिए 9004470700 मोबाइल नंबर का उपयोग किया जा रहा है।

<u>कॉल सेंटर</u> : कोंकण रेलवे एकमात्र ऐसी रेल है जो संरक्षा को ध्यान में रखते हुए भारी वर्षा के दौरान विशिष्ट भौगोलिक स्थिति होने के कारण प्रति वर्ष मानसून और गैर-मानसून समय-सारणी का कार्यान्वयन करती है। गाड़ियों का अलग-अलग समय होने के कारण यात्रियों को गाड़ियों की वास्तविक तथा निर्धारित रनिंग टाइम की स्थिति जानने में असुविधा होती है। इस समस्या के समाधान के लिए, कोंकण रेलवे ने यात्रियों को चौबीसों घंटे चलने वाले टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 1800 233 1332 के माध्यम से जानकारी देने के लिए कॉल सेंटर शुरू किया है।

<u>गोवा कार्निवल 2015</u> : कोंकण रेल ने इस साल भी गोवा कार्निवल में भाग लिया था, जो कि गोवा में एक पर्व की तरह मनाया जाता है। कोंकण रेल की झांकि **'सांप्रदायिक सौहार्द्र'** और **'स्वच्छ विद्यालय'** पर आधारित थी। इस झांकि को पंजिम क्षेत्र में दूसरा और मडगांव क्षेत्र में पहला पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

<u>पर्यटकों के लिए सुविधा</u> : भारत में कोंकण क्षेत्र सबसे मनमोहक पर्यटन स्थलों में से एक है। कोंकण में गणपतिपूले, भगवती चंडिकादेवी, परशुराम मंदिर और अन्य प्रसिद्ध पर्यटक स्थल स्थित है। पर्यटकों की सुविधा के लिए कोंकण रेलवे पर महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक टूरिज़्म के साथ मिलकर रिक्शा एवं टाक्सी चालकों को टूरिस्ट गाइड की ट्रेनिंग देने का कार्य जनवरी 2015 से शुरु किया गया है। अब तक कुल 723 चालकों को ट्रेनिंग दी जा चुकी है।

<u>स्वच्छ रेल - स्वच्छ भारत</u> : माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु जी के बजट भाषण में स्वच्छ रेल -स्वच्छ भारत को ध्यान में रखते हुए कोंकण रेल ने अपने मार्ग पर चल रही ट्रेनों की पैंट्रीकारों से कचरे को जमा करने का एक अनोखा कार्यक्रम चलाया है।

अकसर ऐसा देखा गया है कि पैंट्रीकार के स्टाफ कचरे को ट्रैक पर फेंक देते हैं। कोंकण रेलवे व्दारा एक प्रोत्साहन योजना जारी की जा रही है जिसके तहत् पैंट्रीकार के मैनेजर को प्रति बैग 20 किलोग्राम तक कचरा जमा करने पर 50 रूपए की राशि प्रदान की जाएगी। कचरे को बायोडिग्रेडेबल/नॉन बायोडिग्रेडेबल कैटेगरी में बांट कर जमा किया जाएगा। कोंकण रेल रत्नागिरी एवं मडगांव में कचरा कंपोस्टिंग मशीनें लगा दी जा चुकी है। इन मशीनों में बायोडिग्रेडेबल कचरे को कंपोस्ट/खाद में परिवर्तित किया जाएगा। नॉन बायोडिग्रेडेबल कचरे को अलग से कंप्रेस्ट कर ठिक तरह से निबटारा किया जाता है।

यह कदम माननीय रेल मंत्रीजी के आवाह, **"स्वच्छ रेल - स्वच्छ भारत"** की ओर एक कदम है।

<u>स्वचलित डिब्बा धुलाई संयंत्र</u> :

कोकंण रेलवे ने स्वचलित डिब्बा धुलाई संयंत्र विकसित किया है और इसका उपयोग कोच केयर सेंटर मडगांव (गोवा) में पिछले 7 वर्षों से किया जा रहा है। कोंकण रेलवे द्वारा इस प्रकार का डिजाइन किया गया संयंत्र कोच केयर सेंटर रत्नागिरी (महाराष्ट्र) में भी स्थापित किया गया है। एक और नया संयंत्र कोच केयर सेंटर, मडगांव में सफलतापूर्वक शुरु किया गया है।

स्वचलित डिब्बा धुलाई संयंत्र डिब्बों / गाड़ियों की कई स्तर से सफाई करने वाली एक प्रणाली है। यात्रियों को सुरक्षित और विश्वसनीय सेवा प्रदान करने के अलावा, <u>रेल यात्रियों को स्वच्छ और साफ सुथरे डिब्बों की सुविधा उपलब्ध कराना</u> कोंकण रेलवे का उदेश्य है। इसलिए स्वचलित डिब्बा धुलाई संयंत्र बेहतर धुलाई तथा सफाई के लिए एक बहुत ही बहूउपयोगी तकनीक है।

<u>भविष्य की संभावनाएं</u>

कोंकण रेलवे द्वारा भारतीय रेलवे के विभिन्न कोचिंग अनुरक्षण डिपो में इस प्रकार के संयंत्र को मात्र 1.25 करोड़ रुपए प्रति संयंत्र की दर से लगाया जा सकता है जबकि बाहर से आयतित प्रति कोचिंग वाशिंग प्लान्ट 6 से 7 करोड़ की लागत में आयेंगे। 'रिसनेवाला उपयोगी संयंत्र' और जल मृदुकरण संयंत्र मांग के अनुसार अतिरिक्त कीमत पर उपलब्ध किए जा सकते हैं।

कोंकण रेलवे ने इस वर्ष के दौरान भी प्रोजेक्ट डिजाइन कार्यान्वित करते हुए फैब्रिकेशन, संस्थापन, परीक्षण तथा मेट्रो रेलवे, कोलकत्ता के डम-डम (नोअपारा) कार शेड़ के लिए टर्नकी आधारित स्वचलित डिब्बा धुलाई संयंत्र शुरु किया गया है तथा यह संतोषजनक तरीके से कार्य कर रहा है ।

भारतीय रेलवे के कई कोचिंग डिपों में इस संयंत्र के संस्थापन की व्यवहार्यता की जांच के लिए सर्वेक्षण किए गए हैं। विभिन्न रेलवे द्वारा दिखाई गई दिलचस्पी के आधार पर तकनीकी आर्थिक लाभ के कारण भविष्य में कई रेलवे में अधिक संयंत्र संस्थापित किए जाने की उम्मीद है ।

<u>'रोल ऑन -रोल ऑफ' सेवाएं</u>

कोंकण रेलवे ने यह सेवा दिनांक 26.01.1999 से बी.एफ.आर वैगनों पर ट्रकों को रोल ऑन - रोल ऑफ के साथ सफलतापूर्वक प्रारंभ की थी। रोल ऑन-रोल ऑफ सेवा, सड़क परिवहन संचालकों के साथ-साथ राष्ट्र के लिए एक सार्थक उपहार रहा है। दोनों दिशाओं में 100 प्रतिशत लदान किया जाता जिससे कोंकण रेल को बेहतर आमदनी हुई है। इस व्यवस्था में वैगनों पर ट्रकों की लदान की जाती है। सुरक्षित वहन करने के लिए ट्रकों को वैगनों पर लोड करने से पहले ट्रकों का वजन किया जाता है और पारित ऊंचाई के तहत (अधिकतम ऊंचाई-सड़क के स्तर से ऊपर 3.4 मीटर) के अनुरूप होने की सुनिश्चिता की जाती है। कोलाड-सुरतकल-कोलाड - 721 कि.मी. की दूरी 21-24 घंटों में किया जाता है। इस सेवा की शुरुआत होने के बाद दिनांक 26.01.1999 से वहन किए गए ट्रकों की संख्या 4,04,874 और अर्जन 383.20 करोड़ की गई है।

सूचना प्रौद्योगिकी

एंटरप्राइज कोलेबोरेशन सुइट (ई.सी.एस.) - इंटरप्राइज कोलैबोरेशन सुइट ईमेल के साथ निरंतर संचार की सुविधा प्रदान करता है जो आधुनिक वेब आधारित प्रणाली है। कोंकण रेलवे इंट्रानेट-दिशा पर साझा ज्ञान से कार्यालय उत्पादकता और पूरे संगठन के लिए तत्काल जानकारी उपलब्धता में सुधार हुआ है। यह सिस्टम वेब सक्षम है और किसी भी समय कहीं से त्वरित जानकारी की उपलब्धता की सुविधा प्रदान करता है।

इस प्रणाली की जानकारी को व्यवस्थित बनाने और कार्य में तत्परता की संस्कृति, एक पेपरलेस कार्यालय की दिशा में प्रगति को सक्षम करने से पूरे संगठनात्मक के कार्य में परिवर्तन लाया गया है। यह सिस्टम 'लैन' और 'वैन' भर में बहु स्थानों पर आधारित 3,000 से अधिक उपयोगकर्ताओं के लिए उत्पादकता उपकरण में शामिल है। ई.सी.एस. के प्रमुख घटक हैं (क) एंटरप्राइज ई-मेल (ख) दिशा (इंट्रानेट) साइट (ग) कार्यालय टूलस घ) कॉमन शेयर क्षेत्र, (ड) फ़ाइल सर्वर और (च) इंटरप्राइज वाइड साइन ऑन।

ज्ञानसागर - ई-लर्निंग पोर्टल और शिक्षा प्रबंधन प्रणाली को बढ़ावा देने के साथ कोंकण रेल कर्मचारियों को क्लासरुम शिक्षा में सहायक और पाठ्यक्रम ऑफरिंग को बढ़ावा देने के लिए कोंकण रेल अकादमी (के.आर.ए.) द्वारा इसे अक्तूबर,2014 में लागू किया गया है। इसमें कर्मचारियों के लिए ऑन लाइन शिक्षा के प्रावधान, ऑन लाइन मूल्यांकन, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण संसाधन प्रबंधन के लिए अपने सभी महत्वपूर्ण आयाम हैं।

www.konkanrailway.com वेबसाइट – यह नई सुधारित वेबसाइट है और यात्रियों के लिए सुविधाओं के साथ किसी भी डिवाइस - डेस्कटॉप/लैपटॉप, टैबलेट, मोबाइल, आदि पर देखने के लिए बेहतर है - इन हाऊस विकसित "मोबाइल एप्लिकेशन" नई वेबसाइट से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

ई-ऑफिस – कोंकण रेलवे पर एन.आई.सी.द्वारा विकसित ई-ऑफिस प्रणाली लागू करने का फैसला लिया गया है। इससे पेपरलेस कार्यालय, हार्डवेयर खरीदना और प्रशिक्षण आदि की दिशा में काफी कार्य किया जा चुका है। इन पहलुओं के कारण रेलवे का सुचारू संचालन एक ही स्थान पर स्थापित करने में मदद मिल सकती है। इससे मालभाड़ा, यात्री गाड़ियों, मानव संसाधन और प्रशासनिक संचलन करने के लिए वास्तविक समय की बचत होने की संभावना है। प्रबंधन द्वारा अपनाई गई प्रक्रियाओं को परिभाषित करने से कार्य की गति और नीति के जरिए सुशासन व काम में पारदर्शिता आई है।

जम्मू और कश्मीर (कटरा-धरम खंड) राज्य में ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुल्ला-रेल लिंक परियोजना

ऊधमपुर-श्रीनगर-बारामुल्ला रेल लिंक परियोजना एक राष्ट्रीय परियोजना है। दिसंबर, 2002 में इस परियोजना का एक भाग कटरा-धरम से 30.00 से 33.09 कि.मी. तक, 39.00 से 61.00 तक और 91 कि.मी. से 100.868 तक का निर्माण कार्य कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड को कार्यान्वयन के लिए सौंपा गया। इस काम को करने में 28.614 कि.मी.(82%) का मार्ग सुरंगों का है, 3.495 कि.मी.(10%) का मार्ग पुलों का है और शेष 8% के मार्ग में कटिंग तथा तटबंध शामिल हैं। कोंकण रेलवे ने इन साइट्स पर पहुंचने के लिए 128 कि.मी. सड़क सुरंगों तथा कई अस्थाई बेली पुलों सहित सड़क निर्माण परियोजना कार्य किया है।

विशेष पुल : चिनाब नदी पर सतह स्तर से 359 मी.ऊंचाई के विशेष पुल का निर्माण कार्य किया जाना है। (कुतुब मीनार 72 मी. और आइफिल टॉवर 324 मी.ऊंचा है) चिनाब पुल पर 467 मी.का सेंट्रल स्पैन है। नदी तल से उच्चतम रेल पुल होने से इस पुल का निर्माण कार्य पूरा होने पर यह विश्व रिकॉर्ड बनाएगा। (वर्तमान में दुनिया की सबसे ऊंची रेल पुल फ्रांस की टार्न नदी पर स्थित है इसके 340मीटर के सबसे ऊंचे स्तंभ के साथ गाड़ी 300 मीटर ऊंचाई वाली पुल पर चलती है।) पुल का डिजाइन 'ब्लास्ट' लोड के भार को भी उठा सकता है जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अनूठी विशेषता है। इस पुल की पेंटिंग योजना 35 साल के लिए बनायी गयी है, जिससे 120 वर्षों की सेवा के दौरान केवल 3 बार पुनः इसकी पेंटिंग किया जाना होगा।

नदी पर पुल के आर्क हिस्से के निर्माण कार्य के लिए केबल कार का उपयोग करते हुए निर्माण की एक नई विधि बनाई गई और निर्माणाधीन है। नदी घाटी के दोनों तरफ बिछी 54 मी.मी. केबलों पर यह केबल कार चलती है और नदी के दूसरी ओर 127 मीटर ऊंची पायलोन (टावरों) के माध्यम से जुड़ा हुआ है। परियोजना के लिए संरचनात्मक इस्पात की खपत बहुत बड़ी है और चिनाब पुल के लिए 25,000 मी.टन की मात्रा लगेगी।

कोंकण रेलवे को सौंपे गए कार्य दिसंबर, 2017 तक निर्धारित लक्ष्य के पूर्व पूरे किए जाएंगे।

****